

श्री साहेबकुवेरसतछे॥ अथ ग्रंथहसता सब
प्रारभते॥ अथ मंगलाचरण॥ कैवलसंस्तुतकु
वेर फेर साष्टा सहं सत करी॥ पगटपुचो प्रसा
ण जाणपजस जुगमे जाहेर॥ बंलवेता विदजे
हदेहसूध अंतरवाहेर॥ अरुठसता बंधवा
त आत उर अंतर धरीया॥ वीवीधी मातपवै
भागत्याग करीत त्वउगरीया॥ वस्तु रूप तन
अचुत आपभये उमंगे॥ जडतन त्वेई परती
तवरसलौं अनजलतागे॥ तारपीछे वाक्षा

है स तपंचजननूतोदीनो॥ सकलतोरणकवेरश्चा
१८९ पजई सोजनकी॥ चंडीप्रचाणकभाटताईकी
पूत्राजीवाई॥ वीपसूताएकपंगअंगकिसंध
चाताई॥ साहचायाजमीदारनारदोमतक
उगारी॥ मुगोकियोवाचातवीसातबानी
भईप्यारी॥ वीपपूत्रमतकजीवेसमतउत्तम
कं॥ लीनोतुरतउगायकेरायेरवीसूतजम
कं॥ सक्षमपचाअनंतअंतआवेनहीयेता
जेतेजक्तपसीधरीधमेवरन्यातेता॥ साषी

सबुवा सात खंद प्रबंध ग्रंथ बां नी बहू उचरी ॥ कै
वल भक्त कुवेर ये रसा प्या महं मत करी ॥ १ ॥
त्रय ग्रंथ वा स्व बोध को अंग ॥ मात ने तात सूत
भात ने भारजा ॥ कटं म परी वार नी लाहार त्यागी
ईंद्री सवाद ने कारणे आप नु ॥ आप भुती गयो
को अ भागी ॥ १ ॥ माया ना फंद मे जक्त ल पट ईर
ह्यो ॥ श्री गुण वक्षान वत्सागी ॥ राज ने पाट मुक्त
क छतर रहले ॥ तां हां लगी भ्रा मणा आघी आ
घी ॥ १ ॥ तं तु ना ते ज मे वी स्व वी ल सीर ह्यो ॥ जाय

स ८० तसूपनमेसरतलागी॥तुरीयानीतीतचतीत
परमात्तमा॥सोकोईनवलदेमंदचभागी॥३॥स
रपतीईद्वैभवसूपजोसरे॥कमनाकतकै
लासवासा॥अजवईकुंठकेरूपदचावरे॥दी
नआधानधईलेउमागी॥३॥दांनवमांनवअ
हीकुलदेवता॥लोकचतुरतानीभुषनांभा
गी॥कैहेंकुवेरएदलप्रायो नही॥गुरुगुप्तसैं
नवजोयुंजागी॥५॥साषी॥वप्रातवससबजु
गभयो॥लहोनहीनीजसार॥इंकहांनोनेकां

होतुगा कीयो नतत्ववीचार ई सतगुरुचरन
नचाहना गावत नही गुंन ग्राम मंदमतीमा
यामही पागी रह्यो धन्य धाम ॥ ७ ॥ प्रबंधक
दा ॥ अंग ॥ १ ॥ हदूम सलमां नको अंग ॥ हीदूम सलमां
नदो असकहेवां न ॥ पती एकये चां न पेहे चां न नां
ही ॥ यो केहे रां मरही मां न कुवये जजे ॥ एक नारं
जन एक सांई ॥ १ ॥ एक अपवास संध्या यगायं
तरी ॥ एक नावा जकलमानेरो जा ॥ रां मरां मेती
रं मनंग चीना नही ॥ सांई देदरनां सारपो जा

स ६२ रा एक कूदेवलदेव पूजाराभहे ॥ एक ससितफकि
रफकरा ॥ वादवेवाद नादोयदरदा मूदा ॥ नांकद
कृतयेहोयनकरा ॥ ३ ॥ एक बीलावीधीपाततु।
लसीकरे ॥ एक कगायकटायवकरी ॥ दोयनिरध ॥
किमंदमतीगत ॥ चैतनजोईनेसेवनकरा ॥ ४ ॥ आ
तमापरभवीप्रतपुजाकरे ॥ ईमसाहेबनांसांईराके
केहेंकवेरनादांनदोबंदगा ॥ ईटपासांणकोध्मांन
धाजे ॥ ५ ॥ साषी ॥ चैतनएकचराचर ॥ भंगनहाभग
वांन ॥ अषंडमेषंडीतकरा ॥ पूजेसोअज्ञान ॥ ६ ॥

सांई सतंतरं मरुपा ॥ ह्ये एणु मरपा लीनां ह्य
ईट अजागौ नेवाये ॥ रह्यो सकल नीमांही ॥ ६ ॥
प्रबंध छंद ॥ ईष्ट वंदिक प्रोद्ध को अंग ॥ रा ॥
संम अवतार अपार अवनी परा ॥ आन्य अव
तार अनंत एके ॥ जान पंडीत परां नषो जीजु
वो ॥ धात पासां न के कौं न देषे ॥ १ ॥ आद्य अक्ष
नही देह धारन कीया ॥ देग दरगाव मे चाहा
व के सा ॥ बां न जां न्ये काहा बांगये सेई ह्ये ॥
सांई नही घोर दरगाव जे सा ॥ २ ॥ ईट आसे

हैस
१८२

पनलोपचना करी ॥ रष आ किं न आ धिं न रहे
ता ॥ पोज कते ब सां ई यां ये से का लिष्या ॥ स
च के जुत का जा कौ न के हे ता ॥ ३ ॥ ये से ही दूय
के हे सोय म मन मुय ते ॥ सत स्व रूप क आ ई
न ले हे ता ॥ पत मा पूज त रां म का हा ग ये ग ने
स क ल व्या पि क म ष आ प के हे ता ॥ ४ ॥ रां मन
ही ध्या त पा सां ण के को हा का ॥ ई ट अ ह्ना न ही
घो र द र गा ॥ के हे क वे र अं धे र दो नु र ची ॥ सां
ई सा हे व नां की ने पर प्या ॥ ५ ॥ सा पी ॥ सा हे व

केरी साहेभा ॥ पंचतत्त्वकरदांस ॥ ए पूजा सर्व अर
थकी ॥ सरेनां आतम कांस ॥ ६ ॥ आतम जाणी
ने भजे ॥ को साहेब के साई ॥ ते नंदे वंदे नही ॥ पंचत
त्व मे कोई ॥ ७ ॥ प्रबंध कंद ॥ प्रतमा पूज समु
को चंगा ॥ ३ ॥ प्रतमा पालने का तन रणे करू ॥ अ
रथ उपासीक समु सासू ॥ बीबीधीवीग त्पे करू
सकल संसे हरू ॥ अवण करो सरत धरी बरन चा
रू ॥ १ ॥ जंम को उं साह घेर नार एक प्रतीवता ॥ प
ठैयो प्रदे स पायू प्रतरापी ॥ सतने कारणे प्रत

हैस पूजाकरे॥ सूरतनीजसांमनीसंगताका॥ २॥ रह
ए३ तआलोचमनसोचनीसवासुर॥ आतुरताअ
तीउरधरती॥ रुद्रसूकायअरेहायनांसहाय॥
दत्तदायपायुपायपोकारकरती॥ ३॥ पूरसआ
वीमल्योप्रतीवतानारनो॥ पतमातेहपूजेनव
लती॥ चैतनपरसनीसगसबोदित॥ हरषही
चोतहलतीनेमलती॥ ४॥ तंमसंसारमांमु
रतमहराजनी॥ हरतहरोमनीसूरतसेवा॥ प्र
तीवतानारनोप्यारकोईनेनही॥ पायेनहीप

राबुंलदेवा॥५॥मुरतीपूजतेकल्पकेतेभये
दियोनहादरसवाकक्षरांमे॥केहेकुवेरससा
रनेभेषका॥अटकखेपटककेभरमभांमे
६॥असाषा॥वव्यापवबुंलचराचरा॥ताकोल
हेनममी॥जनसूक्ष्ममलघूतामती॥दीयोउपा।
सिककम॥७॥ईहमेदअनुसूतनहा॥जौंपुत
मापतीराग॥केहेंकूवेरसापतायकु॥काग
हीकेवईराग॥८॥अग॥९॥पुबंधधेद॥अन
मेसबुउचारजडचैतनपक्षको॥अंग॥क

है स हतसा चीका हाडरत हेकाहं थे ॥ धरत पर भाव
१७४ हंमनां कुसिकी ॥ जों नुकि वस मे सस्य उत्तपन
भाई ॥ सोममयारया राउसिकी ॥ १ ॥ देवत्वा देवदे
हेकां नादूनायां ॥ मुसलमानमसित भई प्रति
तघोरा ॥ पचे परपंचनां रंचषो जा रदा ॥ विनमु
दा जायजमदा खोहोरा ॥ २ ॥ व्यापक बंलसर
वंग सांईयां सकल ॥ अकल अव्यक्त नां जक्त प
षे ॥ अवनी अपतेज वायु नभ पंचमु ॥ तत्व पर
मे श्वरवी श्वलेषे ॥ ३ ॥ तत्व के आपपुजावतत

त्वकु॥ तत्वके सन्वसे सकल अटका॥ चैतनर
ह्यउत कस्य नही काउकी॥ भुतक लोतनी ओत
लटका॥ ४॥ बोलता रांमवे फांमबु उत नही॥
हालह जुरहरदंम साईयां॥ केहे कुवेर अंधेर भो
दू सकल॥ अकल किन कलकु पत पईयां॥ ५॥
साषा॥ करत वकाज सरे नही॥ बीन आतम ओ
लषांन॥ मत कोई अटको मांनवी॥ सृष्टि नांन
विध्य वां एप॥ ६॥ चीचकल पतरू कांम धेंन॥ नी
तीयो दीपक जोत॥ पये नां पाये नव वक्ष फल॥ क

स रेनां जो त्प उद्योत ७ ॥ श्रं ॥ ५ ॥ प्रबंध छंद ॥ ई
७५ ह्वा द पक्ष को श्रं ॥ एक दरियाई मकाम दिना करे
एक तीरथ केदार का सी ॥ एक क देव अनंत दूजा ब
हं ॥ एक क पार हजार ये सा ॥ १ ॥ एक त स माले ईजा प
अल्लाज पे ॥ एक माला ले ईश मगावे ॥ एक उदे भये
सुर पूजा करे ॥ एक अथं मते सार नावे ॥ २ ॥ एक स
राद स राय पूरवे जक ॥ एक तावूत हा हं न पे ले ॥ एक
मके जई मांन मो राद क ॥ एक गाया जई पंड मे हे ले ॥ ३
एक डाढी रषे मुड मुडाय के ॥ एक क मूछ राय त चोटा

एकमुवापिछेद्वादसकनषे॥ एकगाटेपाछेपातत्रो
टा॥ ४॥ एसहहरमकीभरमभल्लानगा॥ आपका
पासकआपवंधा॥ केहेकवेरषावंधनषोजानहा
फंदगाबोयमेदोयबंधा॥ ५॥ साषा॥ आपाकिउ
लटावाषे॥ दोयरहेउरजाय॥ पूरणताजांएपावाना
तौंलौंमतासराय॥ ६॥ जेसेतेनसरवएकते॥ यौंसा
हेवतेजाव॥ येसासमजेतोसरे॥ दोवूनकेएकपी
व॥ ७॥ अंगा॥ ६॥ प्रबंधछंद॥ नाराखेबथापन॥
कोअंगा॥ संमपातालनहाधोमचारूसांही॥ सप्त

॥ हैस ॥

॥ १९६ ॥

पूरीनही सुरपाषे ॥ सरगवैकुंठ कैसासगौलोकनही
सरवकरतारपरपारताके ॥ १ ॥ सांईनही भक्तमे
बूबचबूबमे ॥ उचअछानही जोतकेते ॥ सरवकेस
रजेनहारवाकबवे ॥ सांईरहेसेहेजकिसेहेजहेते ॥ २ ॥
रामराजीजांहांकोमकाईनही ॥ भक्तभावानजांहां
दीनदेवे ॥ जांहांजर्निपरकासपोतेकरे ॥ उचनेना
चनांजोनीपेवे ॥ ३ ॥ रूखातरेहेमांनयेमांनपेगांमा
जांहां ॥ हमहंसानपरदांमलेवे ॥ एकअछायदंम
तायमेलायते ॥ अरसतेउतरादरसदेवे ॥ ४ ॥ राम

रहिमांनरमूंजुआकुंजमे॥रूकुवाव्रजकायंमएका
केहैंकवेरहादूसलमानते॥हंममारायनीहंगाभेषा
५॥साषा॥कायंमकादोनुकला॥रांमरहोमरमाज॥
तामेजुगचटकिरह्या॥नारय्यानहानाराज॥६॥ता
तेमोमंनउपना॥साषदेवनकाबांन॥केसेदोनूपचा
मरो॥परषोपदनारबांन॥७॥अंगा॥७॥प्रबंध
८॥अहंगाआपअव्यक्तकोअंगा॥मैंनहाजातने
वरनगुणचापद॥मैंनहाजोगसंभासधारा॥मैंनहा
सेवडाजंगमजंदगा॥मैंनहापोडनेपूरसनारा॥९॥

स में नही सीध साधक के साधन ॥ में नही त्याग वैरा
१०७ ग भोगा ॥ में नही स्थावर जंगम ने जडी ॥ में नही द्रव
ने वैद रोगा ॥ में नही तीरथ व्रत एकादसी ॥ में नही
यज्ञ यज्ञा दंड मुगती ॥ में नही आवं न जां न ग्रभवा ।
समे ॥ में नही चौदवी द्या यजु गती ॥ ३ ॥ में नही देव
देवी पद देवता ॥ में नही काल जं जाल जेहा ॥ में नही
जीवने सावई श्वरनां ॥ में नही पंचमा तत्व तेही
४ ॥ जो जोई कहत हे सो सो हाह मनही ॥ हं महे सो
यनां को यजाने ॥ केहे कूबेर आ केहे रका अरथ

की॥ सतर्तकावृध्यनां सूध्यमाने॥ ५॥ साषी॥ मेहेपू
रणकिपांणगत्य॥ आतनजंतरसाज॥ चालवणी
चैतनना॥ अनमेहोतअवाज॥ ६॥ जाचूनहीजुग
देवने॥ गावूनहीगुणयांम॥ नकरूनरतनारंजन॥ ता
थेकोबडराज॥ ७॥ अंग॥ ८॥ प्रबंधछंद॥ अंमअ
धोनकोअंग॥ मेरोसुम्रएनहीसात्विकराजस॥ नां
भजतंमपदतेजत्रपटी॥ मेरोसुम्रएनहीजोत्पनारं
जन॥ मेरोसुम्रएनहिनिगमकोटी॥ १॥ मेरोसुम्र
एनहीसारगुणनारगुण॥ ईछनांहीनाराकारस्थूलका

स मेरो स्मरण नही देवदेवा लको ॥ मेरो स्मरण नही
ए १ पुत्र गुलकी ॥ २ ॥ मेरो स्मरण नही साहा स्रष्ट मे ॥ मे
रो स्मरण नही मुरती सां मथ हरी ॥ मेरो स्मरण नही
सेव पट मे ॥ ३ ॥ मेरो स्मरण नही जा पञ्च ज पात ए ॥
मेरो स्मरण नही मूरत न रती ॥ मेरो स्मरण नही
चारू कर धरन को ॥ भक्त कर माछु किये काज तूर
ती ॥ ४ ॥ मेरो स्मरण नही अवतार दे अष्ट को ॥ सा
त्विक संतरहे सकल अटकी ॥ केहे कूवेर कैवलनो
मे अला ॥ आन्य उपासना बास पटकी ॥ ५ ॥ सा ॥

नेन नारपेन बाणीवग ॥ श्रवण सूणीत चीत
 सेव ॥ कैवलसांकलपीतरीत ॥ मोदीतमनत्र
 हंमेव ॥ ६ ॥ भोगीनहीकोयीबंसना ॥ धर्मकर्म
 लगाधीर ॥ लक्ष्मलहीन्यारारहा ॥ परकरतीव
 सपीरा ॥ ७ ॥ अंग ॥ ए ॥ प्रबंधकंद ॥ संसेवाव्य
 कपराउत्तरको अंग ॥ बीनउपासनादासनां
 नीपजे ॥ दासवीनाअतीहासनांही ॥ हासवीना
 अविकासनांपाईये ॥ बीनअविकासपरका
 सकाई ॥ १ ॥ तीनपरकारसंजुक्तहरीहारद ॥

हैस भक्त भगवंत ओरुजक्त काहावे ॥ आपद परह
१९९९ रावे न भावे भजे ॥ तो मणे आद्य अद्वैत फावे ॥
॥ दैत उपासना में भेद छे भक्ती नो ॥ चैतन ध्य
क्त नां जक्त जां शो ॥ पूर अषंड ने देई ने सर्वनु ॥ ल
ब्ध मनषंड मे पाणी पाहाणे ॥ ३ ॥ ते ज माटे कहं
स ध्य उपासना ॥ सेवतां वासना सर्वना से ॥ अ
ष्ट द्वेष्टं द पर पाह्य बाधी कहं ॥ घं द पंचुद पें सत्तो
प्रकासे ॥ ४ ॥ ते ज उपासना तं न मन देई ने ॥ सां म
म सन्येहाने पां मवाने ॥ केहें कूवेर सहं केहे रक

रतवतजो॥ तोभजोभवदूषवांसवाने॥ ५॥ साषी॥
भवमेभरमउपासना॥ लागरह्येसबलोय॥ चैतन
ताचीन्यावीना॥ तातेमुक्तनहोय॥ ६॥ स्थावरजंग
मजलथल॥ चैतनसूचेतन॥ तेप्रभुनेप्राद्यावीना
जडपूजेतनमन॥ ७॥ अंग॥ १०॥ अद्यादबंलसद्र
ह्यांतमाहादकोअंग॥ चैतनबंलभरपूरबत्सांड
मे॥ नारमध्यकं॥ जंमनारभरीयो॥ बंलमेईमबं
ल्योडभरपूरहे॥ बाहरभीतरसजलदरीयो॥ ११॥
नारनाहारथाजंतबहूउपजे॥ नांमनेरूपतेतारपी

हे स
२०

छे॥ प्रससपससनेकहोय एकथा॥ आगपंमउपजे
तेजईस॥ २॥ नांहीनोपूगलजोकदाचिकने॥ वक
रतांमकरध्वजहोय श्रेष्ठा॥ सर्वनुजीवनेन तोय
तंनमातरा॥ ३॥ भौनवाचारतांभारेचेष्टा॥ ४॥ ब्रंल
अपहीरथाजोतीसक्तीतंन॥ जक्तपसरनकर
नचागुणआद्ये॥ जीवनेकटपतंगनेसक्ती
नु॥ जोतनीरंजगुणब्रंलस्वाधे॥ ५॥ ईश्वरता
मध्वेव्यासनीआद्यलेई॥ वकरतांमकरध्व
जनीजपेरे॥ केहेंकूवरजोसारप्राघेनर॥ आ

तमा एक नीज सत्वंग सेरे ॥ ५ ॥ सा ॥ पृथक् बू
ध्यने परहरी ॥ एक आतम संमजोय ॥ दैत भाव दू
री करो ॥ तो आन्य नदूतीयो कीय ॥ ६ ॥ घाटे स्थूल स
क्षमने ॥ सांम्रथ भेद अपार ॥ सांग्प तो पतरवार
छुरी ॥ एक लोहा भौन मार ॥ ७ ॥ अंग ॥ ११ ॥ प्रबं
ध कंद ॥ अदबद अनुक्रम समझ को अं
ग ॥ अदबद बंत्स अनुक्रम नो म्रमण ॥ समिन ही
स्वेथ कि उपजये से ॥ पीड पर पेच नारे चनी रमत
सहं ॥ सूक ह्कम ६ हे कर्म धर से ॥ १ ॥ अवीगत्य

हैस

०१ मूल अनुकूल एकताईहे॥ पंचाकरण गुण रमत
मांदांकी॥ एकतां हां आं नम काहा छोड दूर मतिचा
हा॥ जुगलता भाव देदा वनां पी॥ २॥ बंख जुगदी सधे
धा सनोई सको॥ एक व्यापी रह्यो आद्य अंत॥ भात मे
भरमीया काल भये करमीया॥ सरल समझा सम्पा
वीरल संत॥ ३॥ आप में आप समाप स्वाता भई॥ नांग
ई सरत सीर भार देवा॥ पांडव त्यांड नीबी चघर स्वर सद
ते मध्ये दर सतु अर स देवा॥ ४॥ छाड दे भरमना का
ल भये कर्मना॥ धर्म नादूत मे भूत नाकु॥ केहे कूवे

रचैतनसर्वगसंम॥प्येलूसीजंमडरपकाक॥५॥
साषी॥उग्रद्रष्टीअदभूतभई॥गईगमतगुणघात॥
स्वयंमप्रभसांमयअता॥गतिअनभवसाक्षात॥६॥
आपउद्योतअपंमघर॥सगंमसहितसंसार॥कवेर
करतवसवे॥साईयांसारसकार॥७॥अंग॥१२॥प्र
बंधछंद॥साहास्रपक्षनारवतकोअंग॥समझए
हेवीवानाबहंवीधामतमना॥नयटलेजीवसनाते
नयात्पे॥वेदमुरजादबहंबादबूधागडा॥षलक
तामेअडीचलकभात्पे॥१॥अलपसूजानहील
क्षबूजानही॥पक्षकुरक्षसारीजांहीनरीवे॥अ

हैस
१०२

नेक साहा सुप्रत पक्ष पोषे गत ॥ सूरि एत अने रिच
तीची तपोवे ॥ २ ॥ व्याक्रण वेद अती भेद भर मे भ
रा ॥ देव वांणी करी सर्व साचा ॥ प्राकृत पुरुषा मू
रुकुटा विना ॥ समजु वीना सधु सर्व काची ॥ ३ ॥ अट
पटी वांणी जांणी नव राज्ये ॥ प्राकृत देषी नव पुरुषी
जे ॥ सह अज माल अद्वैत ने अनुभवे ॥ प्राकृत होय
तो उरली जे ॥ ४ ॥ व्याक्रण भास अभ्यास वांणी लगे
ब्रह्म निरवांण तां हां कहण कांई ॥ के हे कवे रजां हां
निगमने तां कह ॥ सत गुरू सक्षे जई सकत तां ही ॥ ५ ॥
साषी ॥ सां नीते वृधी वंत को ॥ देव न हा गती वंत ॥ वृष्

जेसावांनिकेहे॥ मतकोयकरो मतंत॥ ६॥ देववांणी
जाक्कहो॥ सनतजीवपदजाय॥ अंमदसासर्वपा
लटा॥ कैवलमोक्षमेलाय॥ ७॥ अंग॥ १२॥ प्रबंधछं
द॥ सीद्धतनरएपेकोअंग॥ वेदवेदांतअनंतसीद्धांत
न॥ तंतनिरमापिछेजंतगंने॥ उचक्उचक्हेनीचक्
नीचक्हे॥ जेजंमतेतंमघाटभांने॥ १॥ सनअसन
कर्मकरियाकृत॥ आकृतजोईनेतेजमांने॥ जीवप
रभावनीजूक्तजांणीकरी॥ व्यक्तवांणीधरीवेदज्ञा
ने॥ २॥ क्षीतीपावक्जलपवनपांणीनही॥ पंचमत्

हैस
३

वनहीव्योमथांने॥त्रीगुणसक्तनेजोतउलमलन
ही॥देवनहीआद्यनीरंजवांने॥३॥नीराकारनी
रंधारनहीनीरगुण॥धरगुणस्वरूपसमांनसां
ने॥व्यासपंडीतकाजीमुलांनवलहे॥करांनपरांन
लष्योतपांने॥४॥नांमनेरूपपडनालकानीपरेसूध्मनी
समसाविरलजांने॥जेपदआद्यअवक्तकैवलसदा॥वि
नमूदातेसदाकवेरमांणे॥५॥साषी॥अमलअलोकि
तअननव॥सुरगतपरहितसमाज॥सूएतांमांस्यांती
करे॥एहेवोउग्रअगाज॥६॥धेधाताविनसनेधसद

प्रायः पूरं जनधाम ॥ जंन जवरत्ना जक्तमै ॥ ते पद
नाञ्च भीराम ॥ ७ ॥ अंग ॥ १४ ॥ अद्वैताद्वैतरम
एको अंग ॥ मां एनी जां एक्कहं सां भलो संत सं
ह ॥ विषवरजीतनी तीत सां ई ॥ मं न बुध्य चीत अहं
कारपो होचे नही ॥ लक्ष्म अलक्ष्म नां पक्ष जां ही ॥ १
पंच पर पंच नी पार पर अधर धर ॥ सभर भर
अजर घर त्ये पेचां न्या ॥ आपही आप उलटी भ
ई सूलट मे ॥ कूलट नी दू लू गई सूलट मै जां न्या
२ ॥ सूरत भई लीन संमलित संमनी रत मे ॥ नी

स रतनीरधारने संगपागी॥ अगुंम अद्वैतमेसम
४ ऊएकताभई॥ जूगतपदद्वैतगयोभरमभागी
॥ ३॥ बंधनेमोक्षनीवीगन्ततोवेषने॥ सेषपदस
मकनारेषत्तागे॥ आद्यने अंतमध्य आतमा
नेनही॥ जंमछेतंमनोतंम आगे॥ ४॥ अचुत
अव्यक्तनीमोजपरमातमा॥ दीनकरकिंन ।
पिजौतेजवरने॥ पूरणबुंत्सप्रकासीपोत्येर
मे॥ डारदेकवरतुंभारसरत्ये॥ ५॥ साषी॥ कीट
पतंगवीरंचीलौ॥ बालसोएकवीत्तास॥ अणुआ

येउणोनही॥सघलेरह्योसमास॥६॥जांहांजंमजे
वोतांहांतंम॥वीवीधीवचीत्रप्रकार॥जक्ररूप
जगतातनुथ॥कीलाकरतअपार॥७॥अंग
१५॥प्रबंधधंद॥अमेमोजकोअंग॥मो॥
जकरमोजकरमोजकरमध्यमे॥नाथनीनी
ध्यमांगुणनावंदमांकुणाडोले॥किटबंत्याल
जेघाटउपजेषपे॥अधिकनांनुंनचैतंनतो
ले॥१॥स्वावरजंगमलोकचतुरदस॥सूधेंरं
हमस्थलप्रकृतीकाहावे॥जेधरेघाटतेगठ

स

५

सर्वमायना॥ कामनां कृतदेषानेधावे॥ २॥ जेरथ
किसर्वएतेजताहारूरुदे॥ भात्यमुकीनेजोपो
तपाषे॥ जांहांलगी आपनु आपपेष्पावीना
तांहांलगी मोहोरषासबराषे॥ ३॥ राष्पवीस
वासप्रकाससर्वतुजमे॥ भुजमेभासकरजोने
भाती॥ कैवसरूपसोहंबंलताहारू॥ नाहेरू
आंन्यनूहीतुजटाली॥ ४॥ एकअनेकअरू
पीरूपेरमे॥ माहाकोमांहीन्यारोकन्यारो॥ ५॥
जरतपेलउकेलसेहेजेहवो॥ छोडदेकवेरका

308

250

रोने पारो ॥ ५ ॥ साषा ॥ संमद्रुही सर्व सरूप परा ॥ अ
रूप आरोपन को न ॥ मोहो मंन गुण ते ग त्प हवो ॥
नीर मे प्रो यो न चीन ॥ ६ ॥ सूर सूर पती हर हर अज
गुण ग्रंथी ना घट ॥ जौं लोकिक लिषता य मे ॥ कैवल
ब्रह्म नीराट ॥ ७ ॥ अंग ॥ १६ ॥ प्रबोध छंद ॥ सील वंत
साक्षा को अंग ॥ सील संतो कवी लोक वीला स
करा ॥ हास कर हंग ह मे स संगे ॥ अहंग नी ओट मे
लांग नु आलखे ॥ तां हां लगी अहंग उमग अंगे ॥
१ ॥ आल वीला य तो तु जता हारे पदे ॥ सार गुण ध

हेस

१०६

क्त

टअटाटजोते॥समउतांचोचमोहोचंनमंनबद्ध
नो॥चातअहंकारनापारपोते॥२॥जेनहीसाध
नसांहांनमुद्रावती॥नांगतीतेजनीआद्यपंच
वचनवीव्यंनीलक्तलेषेनही॥सबूसंमसेरनी
टेरवंच॥३॥तेजबुंलांडअनंतनोईसधर॥सीस
परसर्वमेसाक्षारूपे॥अचलअनबोधसंमबो
धसदीदित॥४॥तईतजीततितअकलओपे॥५॥
दीव्यद्रुषीभईसमकसमसात्वही॥कूरांनपूरां
ननीअेवत्यागा॥केहेकूवेरभवूफेरनाफरकग

३६५

३६५

ई॥ गक भई न क जब अगुं म जागी॥ ५॥ साषा॥ चीत
नी चह उपासना॥ अज वैकुण्ठ क ईलास॥ ईशना
स्ती गौ लोक लौ॥ सहीत समुलादास॥ ६॥ सबू स
रोडा साजका॥ कर्म कांड के बीन॥ सो मत्प सो ब
त्याग के॥ पकरेह कह कीन॥ ७॥ अंग॥ १६॥ प्रबं
ध छंद॥ अंस अनुसुत को अंग॥ अगुं म अघा
वनी भावना भये वानी॥ सेवानी सद्गती से सभावे
तौ दंद ते दूर अंकुर रही अनुभवे॥ तो धवे पागवी
भाग दावे॥ १०॥ अरण वैले हेर बहूप्ये रसूपर सरे॥

हैस

२.७

तोय अद्वैतमें दैत भासे ॥ आछरे लेहेर तो प्येर न
वपर भवे ॥ ईम अविन्यास मे दास आसे ॥ २ ॥ दीम
दरिया व मे चाहा व तो रंग दे ॥ हंसहा लो लना मो
ल चा ले ॥ तांदा ल गा चा द मे चीत लटकां करे ॥
पूख प्रोटं म जो मध्य माहा ले ॥ ३ ॥ सम ऊ सा ध्वा
न दूखांत ना बंद मे ॥ जेग मे होय नार वत संसे
अं न्य दू जो नही सत सोहं सही ॥ सूध्य अ विले
क सम तित अं स ॥ ४ ॥ सकल संम पुर हजुर र
ही हल म ले ॥ अर स पर सता एक लाई ॥ के हें कू

३८८

३८८

वेरगपंमग्रभ आसेभई॥ नांकहीजातकेतातमा
ई॥ ५॥ साषा॥ लक्षकोससीधुमध्ये॥ मोननजा
नततीरा॥ आडाटेडाकौंकले॥ दधिप्रधगेहेरगंभी
र॥ ६॥ थाहनहीअवीथाहनो॥ कारनलेहेरकलो
ला॥ लोकसमस्तउपरछल्या॥ अरणवबुंत्सअ
डोला॥ ७॥ अंग॥ १८॥ पुवंधछद॥ बुंत्सद
रणगुभकोअंग॥ गुभगतीसर्वनीअदस
प्रवनी॥ पेचपडनालपेहेचांनोपेपो॥ जीवप्राक
तमेसीवसमाध्यमे॥ स्वाधअवतारलेईकोई

है स
०८

नां से षो ॥ १ ॥ मध्व कछ वां मवे राहनर संग हरी ॥ रां
मफर सधर कस साई ॥ बृध्न क लंकी कला
भी चतुरदस ॥ एव से नाध के गुभ मां हा ॥ २ ॥ से
समा हे सवीरं चीवी लु लगे ॥ पंचमी सक्त ने जोई
एषट्य भ कि मां दी की ला करे ॥ प्रसवी पारणे ऊ
लो न कोई ॥ ३ ॥ आं न्य जीवं न कि कु न प्राती गणे
गुभ मे सर्व कोई ये से ये से ॥ एही अंदे सा का ह मं
ने उपजे ॥ षटदस चौद बे न्या ज के से ॥ ४ ॥ कोई सं
सार मे उद्र की कहा तद् ॥ जाये वी ना कु वर के कु

वरी गंगे ॥ केहे कुवेरयां हां संत सारी मण ॥ ग्रभ मे
जीषई श्वर जां ने ॥ ५ ॥ सा ॥ ॥ हीरण ग्रभ हरी हा
रद ॥ संमये पूज पूजाय ॥ एक एक ते सेवा करे ॥ कंच
न का जन थाय ॥ ६ ॥ सा लंग सत्या संत तन ॥ ज्ञान श्वो
वण घट मां हा ॥ ना त्प बोध कंचन ऊर ॥ सेव कपा
वे जां हा ॥ ७ ॥ अंग ॥ १ ॥ प्रबंध छंद ॥ ग्रभ वा
वक्त को अंग ॥ सकल चराचर देव प्रग नाग न
रा ॥ वा श्व वैराट नु ग्रभ वा सा ॥ बंत्स ते भान कोई जंन
जायो न हा ॥ सर्व नाग्र भनी कह प्रकासा ॥ १ ॥ जां हां

हैस लगाजेहनाप्राधपेहेचांनगत्य॥तांहांलगातेहनु
२०ए तेजथापे॥तेजप्रकरणप्रकासीप्रायेकहं॥जे
लहवृधउनमांनमापे॥५॥उंमरवक्षफलमांही
जंतुस्हे॥सलहेवक्षनेवेषवीगत्ये॥तंमआंही
जावप्रकृतनीव्रतनी॥नांलहेसावरहेमायात्वक्ते॥
३॥देवलएकमेदीपजोताजले॥हदनुतीमरतेज
टाले॥देषापतंगमंनमंगथकितभये॥दीनक
रकीरणनेतेनन्याले॥४॥त्केनुसीद्धांततेसावस
माध्यमे॥जोतीस्वरूपनाराणपदसे॥केहेंकूवेर

सर्वसादृशकीरहो॥ ब्रह्मसूरतेजनेतेनांपरसे॥ प्र॥
साप॥ मसरीकोमेरुभयो॥ मध्यकीटीघरताय॥ भो
वंनमेभोजनमल्यो॥ वाहेरत्येनेनांजाय॥ ध॥ व्यापी
कमेमापिकमूदा॥ उपजावेअनञ्जो॥ सांम्रतलेई
डोलतफिरे॥ ईस्वरतासारवोज॥ ७॥ म्रंगा॥ २०॥ प्रवं
धछंद॥ ईस्वरग्रभद्रदृष्टकोअगा॥ भांनउद्योतअ
विकासपरकासत्ये॥ लोकचतुरदसअंटाते॥
सूरकाढीसकेछेहनमाहाअग्रको॥ उलटफर
देषतांआपगाते॥ १॥ तंमषटईहतेसहमांश्वे

स
१०

चौदकलाभी अवतारदसना॥ वीश्ववीलासपर
कासकरेतेपरा॥ ब्रह्ममाहातेजनारेषक्रह्मा॥ २॥ नी
ध्यमाहातंमनीगंमजांऐसही॥ कैवल्यपापरपावेनां
सोई॥ बोधअद्यादमेसंतसमीरहे॥ आपअथारु
रकावहोई॥ ३॥ बोलतांबेनमैंचैनपरप्यपरे॥ ब्रह्म
भरोसहतेभारभारा॥ इवतांजंनपोकारकोउकरे॥
वेगपरपायभुषमाहावारी॥ ४॥ तेहेनेकह्यपणसंत
उतकह्यरहे॥ ब्रह्मजलभोवंननीमध्यजाले॥ किहेंकू
बेरकोप्यासव्यापेनही॥ सेहेजनीसेरसदायपाले॥

५॥ **साषा** ॥ मणी मेरू जंम कंगुरा ॥ ये सेहरी अवतार
कैवल मेके हेवा लगे ॥ जो तां अपरं म पारा ॥ ६ ॥ गुण द्र
ष्टा गुण कुग्रहे ॥ प्राकृत पर रेई सा ॥ ध्ये द्रष्टे जुग ब्रं सं हे
गुण गत्य लेष चोवीसा ॥ ७ ॥ **अंग** ॥ २ ॥ **प्रबंध छंद** ॥
संतरे हे सको अंग ॥ सेहे जसू भावनु भावनी त्पे
चले ॥ जंम ध्ये व्योम ने पवन आहार ॥ अंमर आलो
चन करे नही एहनो ॥ आवी पोषाय अविरल धार ॥
१ ॥ तंम अण लंगी अध्यात्मं अनू भवी ॥ परस प्राज्ञो
न अडोल वरती ॥ जंम गजराज हय हह एह लके

स चले॥ पलक पलवल धूजेन धरती॥ १॥ स्थाती थार
१९ वंत अतंत अगोचर॥ गोचर गंपं मकरे ज्ञान भागे
देह वीदे ह्वासर जंन पल पल॥ होय वी ज्ञान तो ज्ञा
न त्यागे॥ ३॥ बंत्स मये भेष अलेष अरूड मत॥ अ
तीर त्प अवी गत्प साय समधी॥ उर धउं मेद अविन्या
सि आपे हवा॥ तेह नीदेह बंत्साने न मधी॥ ४॥ सू गंपं म
ग म न गत्प उलक त प्रती वी बवत॥ नीज स्वरूप माहा
नाथ्य मांहा॥ केहे क्वे र ए देवा जंन धं न्य धं न्य॥ संसे नां
आण सो ते ज साई॥ ५॥ साषी॥ देल ह्वा जो जंन सून्य ते

भ्रमेभासतचंद्रा॥जोवातसेलयेवारने॥सरतेएक
समंध॥६॥जेनहाआवंनजांनका॥तोयवडेतंन
दोय॥देहवडेजंनकैवल॥समउसाद्धांतेसोय
७॥अंग॥१२॥प्रबंधछंद॥संतबुंत्तसंसेदूरीकोअंग॥
साईसेरेहेसदाउगमगेनहीकदा॥संतनेहेनुर
दाकहंद्रहांते॥जंमकोईजंननीद्रावसमांपचो
जईरचोसैनसमेएकांते॥१॥सपनतेहेनेहवस्व
रूपभयूनबू॥जाग्रतजुक्तसरषयजांणे॥नात
नीमत्यअतापटरसनवनवा॥बीबाधाप्रकारनामे

हैस
२१२

गमांणे॥२॥सैनस्वल्सोईनसंतसूपनतंतन॥भोग
नोस्वल्सोईनसंतसूपनतंतन॥सैनस्वरूपनेभोननवून
हा॥जुगलथईजांएपतेएकवरते॥३॥सूपनपुरस
नेजंमपरजाबहं॥तंमयांहांसंतनेवास्वसारू॥पु
रसनेजांएपपरजायप्राधेनहा॥संतपेहेचांएपने
वास्वसारू॥४॥तेजपुरसनेसूक्ष्मतुरियाभई॥सू
पननाजांएपगईसर्वतेती॥केहैंकूवेरयांहांवास्व
वालायतो॥एकरहेसांईजेनेतीनेती॥५॥सापी॥
जौबोरंगावारूमें॥उदयेहोतअपारा॥तौकैवलचैतं

३८८

३८८

नमो॥ उपजत अंग आकार॥६॥ अपनेन हा अपि कसा
अनुसरवान आल॥ बुद्धन ही तं न भावना॥ सेहेज
सरावे कात॥७॥ अंग॥२३॥ प्रबंध छंद॥ नेती॥
नीराज एवा स्वउतपंन को अंग॥ प्रोजन प्राक
मवाक वां एवा ना॥ जां न ही दरसना दरस को ई॥ बी
वप्रती बीव आलं वचं वृकतं न॥ तेवी नारहेई न।
आप सोई॥१॥ बीवप्रती लोह चले चमक जड ताव
डे॥ जडतं न जावं न ते तोय तेजे॥ तोय उष्ण टप्ये तो
लते तो रहे॥ चमक जड ताटले लोहो न हा जे॥२॥

हैस
२१३

तंमपरमात्मातेजचंबूकतंन॥ लोहोवततत्त्वतेपं
चपूलके॥ चमकजडताकहाईमआतममहा॥ स
कीजडतायथेजक्तउलके॥ ३॥ सोहंउंकारसक्ति
जडजाबंनदे॥ सासअरूपतोवास्वनांहा॥ वसु
गत्येघटेनांबधेउपजे॥ जंमनुजंमघेतेमतांहा
६॥ आद्यपूरातंनसकलसमतांगण॥ जेरहोजंम
तेहेबोनेतेदेवो॥ केहेंकूबेरमेभासतेहेबोसही॥
सूपरछांईकेहेपूरसकेहेबो॥ ५॥ साषा॥ जेसेछं
ईयातंनका॥ हलनवलनसर्वअंग॥ सोजंनकिपंम

नवलहे॥ नीकटरहतनीजसंग॥६॥छांईयाजडमे
हेजडनहा॥हंमचैतनचलकाव॥आपकहंतो
नांपते॥व्यापवाभागेफावा॥७॥अंग॥२४॥
प्रबंधकंद॥अभासअनवेकोअंग॥भास
वीभासकीलाससहंनोकहं॥श्रवणकरजोधरी
सूरतश्रीता॥देवजंजातमेदलडेहेकेनहा॥
समउ॥एहेवीरषेसहृषेता॥८॥संन्यनोभास
समिरस्वेउपजे॥पवंनत्येअज्ञापकासहोई
तेजत्येतोयअवनीअपतेहवा॥ईमअन्योअं

हैस
२१४

यजक्त जोई ॥ २ ॥ सरत समापते अग्र अवनी
ल ॥ सब सप्रस जाका सपवनां ॥ पंच एत त्व
नां धां मधरणा रचां ॥ देवनर नाग वैकुठ भवनां
३ ॥ एस हृदर ससां श्रुत माहावत नो ॥ लोक चो
देई कटाक्ष मांही ॥ ओत्प राषा माहातत्य नी
ने जुवे ॥ ते स्विकि दृष्ट ने कट्य नांही ॥ ४ ॥ द्रष्ट पर धां
ई पर मे श्रुत पूर सनी ॥ पूर सवी भास परी बं त्यह
रो ॥ केहें क्वे र सह भास वीधा कही ॥ अर्थ कह आ
त घाल क्ष के रो ॥ पू ॥ सा ॥ एस ह मंडप मायनी ॥

कायनीकर्मकलेस॥स्थावरजंगमजीवना॥उप
जतपरसपरेस॥६॥जीवसाष्याकरदीपक॥अं
न्योअन्यअनेक॥उरमतसहअनंतजौं॥सूंन्यस
खातेएक॥७॥अंग॥२५॥पुबंधछंद॥अं
तमासर्वमअनुसूतकोअंग॥तरवर
एकपयेपेढथापरवरे॥पातफलफुलरस॥ए
कपोके॥जातनेवरणगुणनांमरूपजुजवां
अएप्रकारत्रीगुणलोके॥१॥वक्षनेसाष्याते
भोनबाजाबहं॥तंमबंत्सांडअनंतजोई॥पो

हैस
२१५

॥ एणु लमहा मातणु प्रीष्टतां ॥ सर्वमे आतमा
॥ एणु कसोटी ॥ २ ॥ आर अमर वनराय घं न एकते ॥ हो
यहरीयां फल फुल लागे ॥ चापतं सरवना स्वा
दनु दापडे ॥ नारवी चारतां प्यास भागे ॥ ३ ॥ तं म
अविन्यासि अप एकते उपजे ॥ लोक चोंषां एण
नाजीव जंत ॥ विष वेहे वार अहंकार मन जुज
वां ॥ वस्तु वा चारतां होय अंत ॥ ४ ॥ वस्तु कैवल
चैतन चराचर ॥ एक अषंड अडंग घाडो ॥ केहें
कुवेर पद तेह प्रीष्टा वा ना ॥ जपत पसाधं न स

वराडो॥५॥ सा॥ घटमगपटपडदावडे॥ अं
मरअमापीएक॥ जोअंतरआवणाटले॥ नां
हांकरवासोलेष॥ ६॥ सूरनसरूपाकारवत॥
पक्षरहातपरबीन॥ घाटगलेगत्यधातकी॥
मोहोररहेनहीभांन॥ ७॥ अंग॥ २६॥ प्रबंध
दा॥ वादवस्थितवैरागकोअंग॥ राटरीताभ
ईद्वंद्वसषटमांहा॥ मारगसोईमहराजजांन्या॥ पं
थनेपारकोईसारप्रिछेनही॥ सर्वकोईवाट
नेहाटरांन्या॥ १॥ एकथाएकववेकजुदारचे॥

हे स
२१६

आन्यथा आपनोसमथापे॥ मं न मां न्यात ए मं
त ग्रात्मा करी॥ आचरे क मने जी प जा पे॥ २॥ भेष
ने टे क वे हे वार ना वे ष मां॥ त्रे द फां सा त जी हें
प्र पे हे री॥ शां न जां ए प वि ना ध्यां न वा जु न हा॥
तां हां हं तु कु टं म यां हां मे री ते री॥ ३॥ न्या य पा
तां ज ला मि मां सा वां से सा ने॥ से स वे दं त ने सा
ष का हा बु॥ ए ष ट ष ट प ट मां हा य ष पा रहे॥ हे
ज नु हा र द हा थ ना व्यं॥ ४॥ जे था सर वे ह बु उप
ज नी प ज स हं॥ तां हां न बु सू च बु बू ध्य नां हा॥

ईष्टउपासना आपथापीकरू॥ रहे चरुते परू
व्यापकाई॥ ५॥ गेहे वा ग्राहवानही सम ऊसर
षुसहा॥ सूकहेयां ए नारवां ए जेहेने॥ केहे कू
वेरण सम ऊजे संतने॥ मांन उप मांन न होये
तेहेने॥ ६॥ साषा॥ जांहा लगि धारण धातकी
तांहा लगि भयो नां भेष॥ विसलीया तो क्या भ
या॥ उररत्प नही अलेष॥ ७॥ ब्रंत्नादिक भव भु
पती॥ सरग भोग लौं त्याग॥ कारण ने कल पे
नही॥ सोई सध्व वैराग॥ ८॥ अंग॥ रेषा प्रव

हैस
२१७

धच्छंद॥ अंदै तस मावन दृष्टांत को अंग
कत आकत नावत वेजु नही॥ मलिन ईंद्री
सूची आप मांही॥ तंम वसु मांही वी श्व सर्व
रहं॥ आं न्य अवेव नां भेव कांई॥ १॥ आद्य जं
मनु जं मतं मजा हारि लहं॥ नां थ यु ते गयु को
ई बीजु॥ तत्व तो रंजना कंजना लता॥ छेक
वी चारतां सर्व नेजु॥ घाट अनेक जं मधा तथा
उपजे॥ मूल ने तो स अधीक नुं नां॥ वसपची
पंचा सह वडों घडां॥ द्रव्य वा चारतां सर्व जुं नां

३॥ तिंम अलेषमां वेषनवानही ॥ सर्वप्रोटंम
पुरां एणप्रेरी ॥ संतमाहादेसनावेसजुवेनही
वारकप्रेरकवस्तुहेरी ॥ ४॥ धडगंभीरधेधार
धोरंधर ॥ ब्रंल्यहठभगनमेमगनधुनी ॥ केहे
कूवेरएसंतनेश्राहरी ॥ सूतनीसूंदरीपोततु
नी ॥ ५॥ साषी ॥ जंनमजुवेनहाजक्तनी ॥ का
लनांदेषतपात ॥ अंमरकोसआत्मलह्यो ॥ सं
तसोईसाक्षात ॥ ६॥ पवनपलांगीसेहेजमे ॥ उल
उेतोगात्पसेहेज ॥ ब्रंल्यआंटजुगसेहेजमे ॥ न

हैस
२१८

ही काल के के हे ज ॥ ७ ॥ अंग ॥ २ ॥ प्रबंध वं
दाहरी बोलत संत मुष ब्रह्मांत को अंग
पूतला पोतते भोन जोया लगे ॥ सलंग वीचा
रतां सूत्र एक ॥ भक्त भगवंत प्रांतंत नीमंत
हे ॥ रूप स्वरूप मे एक मेक ॥ १ ॥ आ म्र आ
कास अरूप था उपजे ॥ रूप अनोपम स्वरूप
पदी से ॥ सांम सपेत नेरक्त पालोहरी ॥ पंच
प्रकार आकार वीसे ॥ २ ॥ वारध रवी पुलतंन
पवन प्रेरणा करी ॥ देस विदे प्रवेस का धू ॥ पे
स

चनी पाररहा अंमरवर प्याकरे ॥ जक्ररिजा
वंन अम्रसाधू ॥ ३ ॥ संत कैवलन भ अरूप
था उलसे ॥ तत्व प्रकासितहा समुरती ॥ ग
वंन संसार मेह वंन प्रकृत से ॥ चात चोत्र प
फेलाव सूरती ॥ ४ ॥ ज्ञान उ मंग घंन पार था
कैवल ॥ घाट मे वाट पाडी नेवर से ॥ केहे क
वेर अवाचनी उपमा ॥ संत उ चार मुष सर्व
दर से ॥ ५ ॥ सा षा ॥ संत स भाव जमी जे से
चाद घंन नीर नी बास ॥ आई मी ले कोई आ

हैस

२१९

सकी॥ तर्त मीटावे प्यास॥ ६॥ अबनी अपत्ये
उपनी॥ फेरी अपके अतबार॥ संत सरीर बंल
तोयत्ये॥ पूनी बंल तोय आधार॥ ७॥ अंग
॥ १९॥ पु बंध छंद॥ संत देह अव्यक्त दृष्टांत
को अंग॥ ब्रासतं न वासत्ये भो न जु दीन ही॥
समल उभेत न प्रमल आवे॥ स्वेत पण वासने
अनित जां मण जु थ॥ चारू मीलाते करी ब्रा
सका हावे॥ १॥ तं म दल पवंन त्ये ते जनां पून
ही॥ पेच परबंध स्पे तोय जोई॥ पवंन अपते

४९२

४९२

जनेसंन्यनीसांमता॥ जुगलदेएकताआभ
होई॥२॥ भासप्रकासतेकिरणन्यारीनही॥
समकसंजोगतेउलकउलके॥ कीरणप्र
कासनेकुलकजालंकर॥ एहीचारुमाती
भासभलके॥३॥ संततंनज्ञानवृजितप्रक
तनही॥ मातीतरवेणीवाज्ञानजेहा॥ ज्ञान
विज्ञानप्रकृतकैवल्यमाती॥ तबबनीहल
मतीसंतदेही॥४॥ तीनद्रष्टांतसीद्वातमा
हापूरसनु॥ उरसनुआजसहाथआबू॥

हैस
१८

केहें कूबेर फल आद्य अरूप नु॥ संत स्वरू
पधरी मोई पां फावुं॥ पू॥ साषी॥ संत स्वरू
रूप अरूप त्पे॥ हरी तानो अवतार रतीरगु
ण नागुण जक्त मै॥ दीसत मनुर आकार
ह्या मै संसेनां कछु॥ संत स्वरूपे बंत्स॥ कै
वलनी कल करत व॥ छते पंडु ने कर्म॥ ७
अंग॥ ३०॥ पबंध छंद॥ संत सदेह नाथ
समावन को अंग॥ स्वेत जां मन गये ब्रास।
अरूप हा॥ पवन पां नाबी ना आभये से॥ कि

रणप्रकासबीनां सुरजेसेरेहे॥ज्ञानप्रकृत
बीनांसंततेसे॥१॥स्वेतजांमनगयेबासनेना
सनही॥नामपालटानेअमोतकाहांवे॥अ
भ्रअनासयौंपवंनपांनाबाना॥रूपअव्यक्त
आकासदावे॥२॥किरणप्रकासबीनांसुरस
दासही॥उलटपूतटायमाहाअज्ञाजेसे॥
ज्ञानप्रकृतबीनांसंतसदासही॥स्वयंस्वरू
पकैवल्यरेहेसे॥३॥बीस्वसहंशबीध्येनेटजो
तांनाध्ये॥संतअधिकदेहसर्वकरते॥लक्ष

है स
२२१

तेहे नो कहं सकल वीधी सहं॥ सांभलो सजं न स
मन सरसे॥ धारवी करते जप का समाहा पुर स
नो॥ ससी दल वी स्ववाला सपरषो॥ केहें कवेर
माहा अज्ञा मांही मले॥ तरूणि दल ते जकर
एक सरषो॥ पू॥ साषी॥ संत परी क्षपूरवनी॥
भवने नही ते भात॥ तात केहे परतात की॥ पण
नव जांणे बाल॥ ध॥ उत्तपत सर्वनी एक ते॥ संत स
हीत संसार॥ ग्रंथें भामात सिर उद्र के॥ ए अंतर अ
त वारा॥ ७॥ अंग॥ ३१॥ प्रबंध छंद॥ अद्वैत

वधाप्रसंगको अंग ॥ नोही तो जाबने सीवई
श्वरनां ॥ पक्ष जो तां तो प्रकार न्यारा ॥ जंत जंजा
लना जाल मां आवसा ॥ ईश्वरवी स्वकर नारहा
रा ॥ १ ॥ साहेर एक ने नीर जाती बहूं ॥ सर्वनु तोय
ते एक प्राप्ते ॥ कुप नदी जल पोषर वेहे कला ॥
भोमीवी कारथा भो नदी से ॥ २ ॥ एक पा बाल गो
एक घावे नही ॥ गंग जल अंग नुपंग षोई ॥ अव
नीवी लाय तो एक सरसु सबे ॥ अरणव था नदी
अलग कोई ॥ ३ ॥ तं मयां हा पंडु बंसांड प्रकृत नो

है स वासना व्रजणा होय परले ॥ जीवने सावई स्व
२२२ रनु एकता ॥ पक्षपाती नही बं त्य सरले ॥ ४ ॥
अंत आलोचनां सर्व नु ये मछे ॥ मुजने आज
थाया द आबु ॥ केहें कूवेर सी फल सा करनु
गोटली चोटली सही तफाबु ॥ ५ ॥ साषी ॥
जे पार स पार स करे ॥ ता को बने नौं घाट ॥ संत
पार स जीव हरी करे ॥ अब दू जाय अटाट ॥ ह को
टी तीर थ जप तप करे ॥ जीव द सानव जाय ॥ सो
संत न निक सें न में ॥ आवा गवन मी दाय ॥ ७ ॥

अंग॥३२॥प्रबंधछंद॥संतसेवानीतीकोअं
ग॥तेजमाटेकरसेवनसंतनु॥जंतनुजालवीला
लआजु॥पंडछतेनूंजोंतंपरमेस्वरपांमवा॥वां
मवावीघंनतेकांमकाजु॥१॥सेवकेसारनीरधार
देदारनी॥आपटातीनेहरीव्यापजोवे॥तरणनी
आयनांप्रभवेकेहने॥तेहनीपुजपरमांनहो
वे॥२॥हासवानोदप्रबोधप्रभुतणा॥सारगुण
घाटनांसर्वपेपे॥सूध्यप्रेमेकरीसरवसरेहेध
रा॥तंनमांनधंन्यजांहासंतदेषे॥३॥हरषहीचो

स
२३

लमनभोलभावेफरे॥गदगदकंठगेविंदगावे॥दी
वसनेरेणप्रवेणपरसेवमे॥देवमेद्वैतरेहेदासदावे
॥गलीतवचेंचनगुरूवागरसागर॥नेचअंमि
तरत्पप्रात्पभरियां॥केहेंकूवेरएल१३३नेती
तणां॥भक्तनांजक्तमेकाजसरियां॥५॥सा
॥संतसेवागुरूबंदगी॥आतेपोहोरअभ्यास
प्रातसहीतपुजेहरी॥सोकहायेनाजहास॥६॥
दासातंनधिंन्यतंनमंन॥उपजेअतीअनुराग॥
तारमात्येकारतारसं॥जिनेसारमोहोटेभाण्प॥

श्रंग॥३४॥प्रबंधछंद॥आदरकोश्रंग॥बिनआद
रनांकाजएकोसरे॥काहेरसनवरायराजे॥सरर
एतुरमेसीसदीयेवातु॥अवछरातायनांसंगलीजे
॥कुपपन्येविनांनारनापाईये॥घेतकिबीचपा
तालकेरु॥फेरनेजुबीनाबाहारआवेनही॥नाज
नहोयकरतवेरु॥२॥पारसपायकेजेनभुषेमरे
लोहनेलायनांआंसमेले॥अलपउद्यमसारुरहे
आलसी॥भोगवेदासीद्रसंगभेले॥३॥जानवीता
रकोईबारवासोवसे॥नाकबेगोजईनारआगपे॥

हैस
१२५

तांहीनो तांहीमनमांहीजलप्यांकरे॥बो नपा
येनवप्यासभागे॥४॥नाजनारीनरकंचनपाव
ही॥जांनवीनीरवेवीरतांही॥केहेंकूवेरजोआ
दरेतोमाते॥जीवमेटीजईब्रंस्तमांही॥५॥
साषी॥बूटीहोतरसायणी॥करेधातकोही
म॥जीवमेटीनेसीवकरे॥तांमयांहांआद
रईम॥६॥सकलकलपनातजरज॥भजमं
नआतमईस॥एकद्रह्येअनुभवसबे॥वस्तु
वसवावीस॥७॥अंगी॥१५॥प्रबंधधंद॥

श्रुता आदरको अंग ॥ आदर सो क स्वाधिर हो
मन ॥ हार पांम्ये सन ही हो ज होई ॥ जो क छ होय
सो आदर सें मी ल्ये ॥ बीन आदर नां होय कांई ॥ १
आदरी अवनी परई द्रवर्षी करे ॥ नो पजे वेतव
न राय पीले ॥ सर उद्योत ते आदरी ने करे ॥ तेज
प्रकास होय ती म्रवी ले ॥ २ ॥ लेई कर तार अवत
र अवनी पर ॥ साहादर सर्वनु कां म की धु ॥ दूष
संघारी ने दासनी बारीया ॥ आदरे गोर स ऊहे
र पीधु ॥ ३ ॥ सर जन एक नी जीव जाती सहं ॥ वं

हैस
२२६

स्यनेभीननहानुंनकोनी॥कोटीअनंतवीक्षु
भयेआदरी॥नादरीतेरह्याजीवजोनी॥४॥आ
दरेसत्कीस्वरूपथादेहधरे॥त्रीगुणतेस्यकि
काजमांहा॥केहेंकवेरसहंआदरतेहवु॥आ
दरसोबडीवस्तकाई॥५॥साषी॥सावध्यांन
थईसूधमने॥रांमरटणातेहेलाय॥कबूहक
हरीकीपीकरे॥देहेपरमपदआय॥६॥आपा
परमेरीमटे॥उपजेअनुरधज्ञान॥फेरीमील
नमनमोदनां॥जानबूअवीलांन॥७॥अंग

ॐ ॥ अंग ॥ ३३ ॥ प्रबंध छंद ॥ भक्ती पडनाल
काको अंग ॥ प्रथम ही दास तद्युताय गुरु ते
लेई ॥ तिलक तुलसी जप माल कर में ॥ अंग
उष्ण हरि चाह चंता भई ॥ दोद सधाय नांस
हाय घर में ॥ १ ॥ दीतायो सार असार जां न्यो परो
तां हां धारो चीत जां हां वीत ची न्यो ॥ आन्य उर
ऊण गई वस्तु नाव गलही ॥ भेद पां मी भयो भा
व भो न्यो ॥ २ ॥ आतायो प्रेम प्रकास हला सजे
दास नो दास थई संत सेवे ॥ आदर मां न अ

हेस
२२४

विलांनसरध्माभसो॥धाईनेदूरघाउरलेवे॥ज्ञांनच
तूरतोसेवकरतांहवो॥सबुनीमोहोरषीसर्वषोई॥क
र्मकलेसआवेसनेपरहरी॥घटघटआतमाएकजोई
४॥पंचमोसंचविज्ञांनवेताभयो॥बंझसर्वगागततां
नगावे॥केहेकवेरएदासदावेकरी॥आदरीनेअवि
मासपावे॥५॥साधी॥प्रथमदूतीजीवदासपद॥ची
तीयेईस्वरआस॥चोथेवस्तुचराचर॥पंचमेपो
तप्रकास॥६॥सेवतहरिगुरुसंतने॥भर्मगयोसब
भाग॥अवस्थिताजामेकही॥जाहांहतीनीजजाग॥७॥

३६॥ बंल मिलन आदर को अंग ॥ प्रबंध छंद ॥ आ
दरे धात पासा एनी मुरती ॥ सेवतां सेवतां देव जो
डी ॥ आदरे ईशुक कौ सना होत हे ॥ आदरे भोटनी
बांग होई ॥ १ ॥ आदरे कायथा होत हूता संन ॥ आ
दरे तक्र परतु पपावे ॥ आदरे भोमी ना भाजन ना
पजे ॥ लेई भरे नार मां हाषां न पावे ॥ २ ॥ आदरे बाग
बाडी बगाचा बने ॥ वापाने कुप गोडे त लाई ॥ अ
डसट तीरथ आदरे तो करे ॥ दूर थे सजन जई माला
ई ॥ ३ ॥ पावतां आदर पावतां आदर ॥ आदरे हासने

हैस
१७

चालहोई कांमनेका जसौं साजते आदर॥
आदरे उद्येन सर्वकोई॥ ४॥ आदरे जक्त नो भक्त
सह को कहै॥ आदरे जीव नो सीव थावे॥ केहैं कूवे
रा आदर आगवो॥ बंत्स मेले ईने जई मेलावे॥ ५॥
साषी॥ हलण चलण जेजे रूची॥ सह आदर ते
होय॥ ताते तु आदर कर॥ प्रभु पद पावे सोय
॥ ६॥ आपरहीत अद्वैत सा॥ द्वैत दूराई चाहव॥
भीनरहीत॥ पण लीन सा॥ नीरष नीरंतर सा
वा॥ ७॥ अंग॥ ३७॥ प्रबंध चंद॥ आदर वीव

ककरणको अंग॥ आदर भेद क भेद संभेद
जे॥ जे स्वकि जे पद सूध पां मे॥ उतं म आदरे उच
पद प्रीम ले॥ मध्यम आदर नीच पां मे॥ १॥ आद
र उप जे मं न था जे टला॥ ते टला घाट ने ग री फे
मे हे ल मे डी अ ट री ज रूपा करे॥ संच वेद्रव्य के
राज की जे॥ २॥ आदर होय अहंकार ना अंग था
अहं ग थ ई ने फ रू जंग मां ही॥ जात ने वर्ण आ
श्रंम नु उर थ री॥ आप बडाई मां आं नु कोई॥ ३॥
आदर बूध था साहाद सर्व को॥ जपत पसा

स धनं ध्यां न कीजे ॥ आदरे कर्म सुधर्म सुचार
१८ हे ॥ देह दमे ईद्रा कोरां मरा जे ॥ ४॥ आदर सर्व
तौ श्रेष्ठ ते चातनो ॥ वातनो मीत थावाने ई
छे ॥ केहें कूबेर ए आदर चौधरा ॥ पार पां मे
नर सार प्रा छे ॥ ५॥ सा ॥ ॥ हंस गती मत्त जे
हनी ॥ साहादर करे सा नेह ॥ नीरत जी पीये हन
रने ॥ संत सहां ना तेह ॥ ६॥ तत्व भेद ना जे करी
सरि सराडेवस्त ॥ जुग जीव न पये पाई यु ॥ हल
मल हस्तो हस्त ॥ ७॥ ॥ ३८॥ प्रबंध संद

आदर अनुसूत मोक्षफल उबज को अंश ॥ पे
 हेतुपरियां एजे को करे चारु मे वा रू मे तरण
 रही भरण पोषे प्रे की सर्व मली मत एक स
 उपजे जे हेतु फल होय मोषे १ प्रथम मन अ
 हे मेव जो उपजे तो चात अहंकार तां हां व
 ध्य जावे तेह नो वेस सरे स सराट वा आ
 टवा पे र सीर मंन गा हावे २ आदर मोहोर
 अहंकार था उपजे तो भजे आदर ते ज ते हे
 वो मंन बूध चात आवी वर ते मोही उपजा
 मा

हैस १९ वे अती मेर मेहे वो ॥३॥ नांही तो आगल बू
धिया उपजे ॥ तो सजे आदर साज ते सो ॥
मंन अहंकार ने चात ता मे मीली ॥ मे ल
वे जोग जे से कु ते सो ॥४॥ जो कदा चाक ने चात नी
चाहना ॥ होय मंन बूध अहंकार आगे ॥ केहे कूवे
रती नु मीली ता य मे ॥ बंस्त्र मे मे लवी भां न त्यागे
पू ॥ सा ॥ आदर की अन मे सबे ॥ बहं वीधी का
ही बताय ॥ जापर सत गुरू की दया ॥ ता सूर
सम जाय ॥५॥ सम ऊण नी सम सा समी ॥ रमी रहे

कोई संत ॥ आपा पर अलगु वित ॥ संची भये सी संत ॥ ७ ॥
चंग ॥ ३ ॥ प्रबंध छंद ॥ आदर सार सिधंस्त प्रापती को
चंग ॥ आदर जे स्थकि उपजे तेलषी ॥ संत समजी सके ॥
जूत जे हेना ॥ पेटनी आद्य लेई साप्या जो तां सरे ॥ ज्ञान द्र
ष्टे फल दायते हेना ॥ १ ॥ सार असार परकार सरवेल
ही ॥ उदये थी पद पाय सधी ॥ एक थी एक अधी कनरणे
करी ॥ आचरी ते भई मोक्ष वधी ॥ २ ॥ ब्रह्म जयारथ जो ये
प्रसारथ ॥ आस सवारथ सरवटाल्य ॥ डाल को लंब मेक
ए ओ लंब वे ॥ मेदनी उपजनु मुल भा ल्य ॥ ३ ॥ तो हो मली

हैस
१३०

आपसमापसर्वेथई॥ नाध्यउभुरहीसूध्वबोले
अहंब्रंसेतीब्रंसांडब्रंसेभरी॥ हंरहो आवरीमो
क्षकोले॥ ४॥ आतमासश्नोपश्नजोतांअसू
तांहांकसूकारणआंन्यकेहेवा॥ केथाकेहेने
केसेवेगगउलहपे॥ एकोहंगव्यापितंगदेवीदे
वा॥ ५॥ सामथमेदसूरदेवदेवीवहं॥ एसहंमुज
थाचीनमाहारू॥ केहंक्वेरहंमकैवलकारण
आरणमेरचुवीस्वसारू॥ ६॥ चैतनताचादनी
माध्ये॥ तेहेनीएनीखांए॥ घाटरहीतसेआ

॥साषी॥

त्मा॥ ते करता हं जां एप॥ ७॥ वीस्व सकल वैकुं
र लगे॥ जावत प्रोय ज जंच॥ पेषं तां कैवल्य प
षे॥ में हे करता ते रंच॥ ८॥ अंग॥ ९॥ प्रब
ध छंद॥ वीस्व करता को अंग॥ कहं अनु
सार परकार द्रष्टांत से॥ सध्व सीद्धांत सम
जाय ए हे वूं॥ जे वा ध्ये वीस्व वीला स सहं मे रचु
ते सचु जंम जणाये ते हे वु॥ १॥ जंम गारी लोह नै
ते जथा होत हे॥ सांण सीये र एप ने ह ओरी॥ घा
र अने क घ डाय बहत स्य की॥ सो ज ला वी पर

है स
३९

वत केरी ॥ २ ॥ तंम आंहां कैवल्योह गीरी तेस्य
की ॥ सोहं उंकार येर एप हथो डी ॥ गुण संजु
क्त प्रकृत ग्रही सांण सी ॥ अनंत ब्रह्मांड नी
मध्य पेडी ॥ ३ ॥ तार हो घाट नागर बो हो लाघ
इ ॥ लोक चह ओर नी जीव जो नी ॥ अंत आवे
नही ये टला देह धरू ॥ सो ज कैवल्य पर वत सो
नी ॥ ४ ॥ जंम गीरी लोह नेरा घू काई दे नही
तंम कैवल्य सोहं गस्पा स ॥ केहें कूबेर थई का
रण कारजा ॥ म्हे उप जायु आवी स्वकीं स
वीला

साफा॥ चौदहो वंन गौ लोक तौं॥ तेहे नो में
करतार॥ सस्वरूप से उचरो॥ नीध में रही नी
रधार॥ ६॥ ब्रंत्स अंस जुग में मम॥ कैवल्य घंन नो
ओज॥ एक अने के हिल मील॥ मुग तार मुम
नोज॥ ७॥ अंग॥ ४१॥ प्रबंध बंध॥ भव उत्त
पन कारण देषा वंन को अंग॥ कारण का
रजा का जधे कारण॥ तेस्व की उत्तपत्त्य सर्व
होई॥ कैवल्य कारण ते परा पारहे॥ स्वचिदा
नंद नो कंद सोई॥ १॥ ब्रंत्स धे कारण ते अनुधा

है स
२३२

रण॥ जो तीस्वरूप कारण कांई॥ कारजासक्ती
स्वरूप ते थाहवी॥ श्रीगुण ते स्थविकि काज मांही
२॥ अंत परले सहंबं त्य मांही भले॥ उपजे तो पू
नी बं त्य मांही थी॥ कैवल्य कारण ने कछु नां अ
डे नां पपे उपजे कांय तां हां थी॥ ३॥ बं त्य छेजे
कडे ते था नां को बडे॥ आप के था भयो ना उट्यो
ते॥ नयं ता नो अंत स्वां मी त सहं नो पती॥ ईश्व
राई स नो धी स पो ते॥ ४॥ कारण कारजा काज धे
कारण॥ ए चहं अंत स करण जाहा क॥ केहे

कूबेर-आपार-अपार-गत्प॥ सूवरणावकरू
मैताकु॥ ५॥ साषा॥ जांहांकरताकोयेन
ही॥ अदबदबस्त-अमापा॥ जौं आदितउद्यो
तमे॥ उडगणासरवसमापा॥ ६॥ जौं तरवरतुचा
तन॥ यौं कैवलनेबुंत्त॥ तुचानेजुगपाख
वण॥ कैवलकाठन्हेकमी॥ ७॥ अंग॥ ८॥
प्रबंधछंद॥ नीधीअंतसकरणाकीअंग
अंतसकरणाप्रकर्णवीचरणजे॥ जेथासफुर
एताहोयजेहेनी॥ बुंत्तअनादनीआदलेईने

है स
२३३

कहें॥सूत्रागसंजुक्त उपहास तेहे नी॥१॥कै
बलनु चीत चादवत वृत्त जे॥वृत्त सपुर
ए अहंकार जोता॥जोत प्रकास उपास सक्ती
बूध्प॥सक्त सभाव मन नी गुण पोती॥२॥सबू
सप्रसरूप रस ने गंध जे॥पंच एमं न थी प्रगट
जोई॥ईंद्रा एकाद सबूध्प थी होत हे॥सहीत
प्रकृत से देव त होई॥३॥अंत सकरण चास्त
अहंकार थी॥सार थी पंडर थ प्रथ क पापे
चात ना चेत ना सर्व अंगे मला॥चलवली चा

७७०

७७०

हंतं न जाय स्वाके ॥ ४ ॥ अंत सर एही कैवल चैतं न नो
आंत नो मन्त कोहन जां नो ॥ केहें कुवेर आ विस्व
वस्तरवत ॥ तेहनो सरवतां एणे नेवां एणे ॥ ५ ॥ सी
पा जे सेतरीया तुपकी ॥ प्रथम जो सर ए गार ॥ नीष
साष सरवे तुपहे ॥ दिसत है त आकार ॥ ६ ॥ पंचा कर
ए परोक्षनु ॥ प्रतक्षक हू पोकार ॥ समझा खेरे हेव
सदा ॥ आप व्यापनी हारा ॥ ७ ॥ चंगा ॥ ८ ॥ प्रह
धर द ॥ वीख लीन ननु कव को संगी ॥
मंन लये होय तो पंच अतू प्रही ॥ अवन्म अपते

हैस
२३६

ज आकासपवनां॥ देवनरनागवैकुण्ठगौलोक
तौ॥ भ्रंगआनंदउमंगसठंनो॥१॥ धीढलतेअ
रपयअंगीकृत॥ वतसांश्रतप्रकृतकेरी
ईद्राणकादसनारसवासना॥ सासनासक्त
उगेनोफेरी॥२॥ होयअहंकारअनुधारसमा
गत्य॥ जीवअंकुरवीतसर्वनास्ती॥ जोत
नीरंजनकंजकालपवस॥ नायसतेजत्रपु
टाभास्ती॥३॥ चीतनीरवतपांमेसहंपारजन॥
बुंत्वनरवंसकैवल्यतुरीया॥ त्रीगुणात्मंजय

तसूप्रसक्तातन॥ सोप्रा नीरंजनञ्जदूरीया॥ ४॥
अदबदनीअवस्ताकहाब्रंस्तौ॥ अंतसकरण
नीवरणाआदे॥ केहेंकुवेरकैवलचैतनजे॥ तेस्य
किसर्वओरीउपादी॥ ५॥ साषा॥ कैवलमेंकेहे
वानहा॥ कारणतांहांकतहोय॥ कारणप्राहाका
रणपरे॥ कैवलकहायेसोय॥ ६॥ ईंद्रीग्राहाजईंद्री
सबे॥ सकलकियोपरात्याग॥ बिंनईंद्रीकोंईंद्री।
ग्रहो॥ ग्रहणहारवीभाग॥ ७॥ अंबा॥ ८४॥ प्रब
धिछंद॥ कैवलअद्वैतहैतरमणसाक्षी

स कोचंग॥ आद अनाद उपाधते अविगत्य॥ स्वाध
१५ एकल मल तो जदरसे॥ जंम नो तं मज था म त हो
त जो॥ के था के हे के हे कुण पर से॥ १॥ आप अ
प्राप जे ते ज प्रापे थई॥ जे स मे जे ग मे तं म पे ले॥
पेल क पेल उकेल अल वे करे॥ कल भरे कल प
र ही सद न छे ले॥ २॥ रुंध न रा जीवं न हू न ही दी व्यने
अलग नो अलग ने सलग दी से॥ तं नु धर जंतु अ
णु आद्य नी जां ए स ह॥ क्रत नु एक नां रे ष वी से
३॥ जाग्रत जाच क सूप न राई भये॥ दोय स सोपती

मांनरेहेवे॥ तेपरतुरीयानेकेहेवानांकछु॥ सर्वपे
हेचांनतेतेजलेहेवे॥४॥ जायतदूषसूषसूपनतु
रीपदे॥ जांएपपणाहांएपनेमांएपआंही॥ केहें।
कूवेरकैवलचौतनने॥ येमसेधांएवेधांएनांही
४॥ **आपी**॥ जेसेपरजापेचकी॥ रचेरायनारीत्प॥
हारजीतबाजीवीपे॥ पेलीरहतअतीत॥६॥ स।
ब्रानिततएवीत॥ अनुभवतांहांनहीअंत॥ वा
यंकसाहकनांसके॥ सांमथसेषअनंत॥७॥ सा
अंग॥४५॥ प्रबंध छंद॥ कैवलस्यारउ

स
६

पाथीदरसकलाको अंग ॥ चाह अ चाह अ घाह
अरो कित ॥ नाईत जाईत चादघरत्ये ॥ पंचमा
भुतनो भरम अद भुत थई ॥ लोक परलोक मे
दरस परसे ॥ १ ॥ दीन मुषासन मूषजं मको हृदये
प्रगटस्वे सकट मे वह न्यवरते ॥ प्रोक्ष्ण प्रतक्ष्ण थई
काज सद्गुनु चले ॥ मुरनां सेष आवे मधरते ॥ २ ॥
तं म अं हां जं न अत स चैतन मुषा ॥ कैवल्य सू
रसमापराषे ॥ कां म नाका दृजली मल उज्वल
चनु भुज मुरती थई दरस दाषे ॥ ३ ॥ पंडक लोत

नुकाजतेथासरो॥वीस्ववालासअतीहासअंहीनु
चर्मनाकर्मनोधारनधेभयो॥रंचआवेनांकैवल
महीनु॥४॥चर्मनोधर्मतेभोवनचतुरदस
चर्मनाचौदलोकिकनाथ॥केहेंकुवेरअवतार
किरतारना॥वीतवत्रेकसहचर्मसाथ॥५॥सा
॥जांहांलगाजोवाजातवा॥दरसंनदरसी
हार॥तांहांलगावस्तुतानही॥भासोआपवी
कार॥६॥वंसवीचारेवरगनो॥अरकवडेजंमक
रण॥तंमआपाथीएसह॥वेदहवुवीचरण॥७॥

स

३७

अंग॥४६॥प्रबंध छंद॥अथ चर्मथूलसूक्ष्म
प्रकारणमाहाकारण कर्मनको अंग॥ चर्म।
अपतेजनेत्रनत्व अवनीनभ॥ चर्मचीद सक्तीने
त्रीगुण जोती॥ देवनीरंजन चर्मचराचरा॥ चर्मची
दमांहीनीरगुण उद्योती॥१॥ चर्मथूलसूक्ष्मका
रणमाहाकारण कह॥ आतमा जागवी भागरापी
अरधने उर्ध्वीसेई दोउ चर्मना॥ अधीकने नुंनव
रतांत जाकी॥२॥ पवननी आदलेई नीरना जुभ पे॥
धरण आधार पुरी वारजाको॥ द्रष्टृ पदारथ लोण

४०८

४०८

आलंगन॥ तांहांलगी थूलसहचर्मताको॥३॥
सक्षमचरम अनुकर्म अबी लोकउ॥ जे कहेंस
ब्रह्मप्रससहात॥ देव अबेवमाहात तब नूतात्बर
मूलप्रकृतसांम्रथग्रहीत॥४॥ कारणचर्मनी
रधारनारंजन॥ अंजनपूजपरकासपाषे॥ के
हेंकवेरने कारणनीरगुण॥ चरमचैतनता
मांही दाषे॥५॥ साषी॥ नीरगुणनी आदेकरी
ईश्वरताबहंभेद॥ चर्मवडे कैवल्यथा॥ तातेन
हीउछेद॥६॥ सप्रदीपनंवकहतहे॥ लेईअव

स नीचंकुरा॥ नीकरजंमनुजंमसदा॥ विनवाधि
३८ व्योमसफुरा॥ ७॥ अंग॥ ४७॥ प्रबंधछंद॥ उपाधि
रहातकैवलनरएकेको अंग॥ आतमा जागवाभा
गकह्योहंतो॥ अर्धदेउर्धदो चरमवासे॥ तेअभीप्र
यसंमदायसमजावहं॥ जेअपुखणरहोअवासे॥ १॥
अर्धतेआतमाउर्धपरमातमा॥ उलटसूखटाथ
ईचर्मचबे॥ सूक्ष्मथूलदेआतमानेप्राये॥ कार
णहेकारणप्रमातमालुबे॥ २॥ चारपरकारना
चर्मचरणजावी॥ जांहांलगीआत्माप्रमात्मा

आंहा ॥ आतमा जाई पर्मातमा मेमले ॥ सश्रम
थूलदो चर्म नांहा ॥ ३ ॥ तिजे परमात्मा अपूर्वार्ण
मे जाई मले ॥ कारण ने कारण दो चर्म जावे ॥ अ
रत अनभोग अजमाल अमोघरध ॥ एक कै
वलपद तो जकाहावे ॥ ४ ॥ कैवलाकार आकार
वीलेहवे ॥ छे छते तो पदेतं मतेहेवा ॥ केहे कूवे
रमेंदास तेहेनो सही ॥ गुरुहर देगं मलही संमसे
वा ॥ ५ ॥ साषी ॥ कैवलतानी महदता ॥ गये चरम
ना ओटा ॥ सलकाले सलीतानही ॥ तो सिंधु के था

है स ३ ए प्रोट ॥ धनी गमनी रूप ए नवरह्यु ॥ के हे वा क र ए को
य ॥ परने ता पद अदबद है तरही तस्वे सोय ॥ ७ ॥ अंग
८ ॥ प्रबंध छंद ॥ कैवल गुरु कुवेर सा स अंग
ता को ला ष्य ते ॥ संत साहेब एक मे क जी बना
जां नी सक ते अ ॥ गुरु को अंग ॥ चौ पाई ॥
३३ ॥ गुरु तन ज्ञान वी ज्ञान वां ए व दे ॥ चाद चै
तन रहे अचल जे हे नु ॥ गती पद नीर गुण सा गुण
कर साहवत ॥ व्योम संम सर्व ए रूची अगम नें नु
॥ १ ॥ स घड ना सा अती अधिक मा रूत से ॥ रोम प

रश्मिगणितईडजाके॥ भ्रगुटीभ्रववाछुनीअ
नंतसोभाअज॥ वस्तुव्यापिकजातमुषकता
के॥ २॥ अजरअद्यापीघरवाससरवातात॥ अध
रशासनपरअकथध्यांना॥ रूषीमुनीदेवदैव
तजाकुजजे॥ आंमउपासांनेतांहांगंमसांना
३॥ जांनवमुक्तनीजुक्तछवेसीधी॥ नांनीधा
चतुरधापंचपरसे॥ रवीससातेजप्रकासपो
होचेनहा॥ अकलबीराजातअधुधुअरसे॥
४॥ कैवलनापरसासनुभासन॥ नांमन्यरू

हैस
२४०

धरूबं सनेष॥ केहें कूवेर एहे वारें गुरू माहेरा॥
उलटउसास कैवल एक॥ ५॥ साषी॥ गुरू मेरान
ही घाटका म्हें सीसनही तनकाठ॥ चैतनसूचै
तनमीत्या॥ दोनुअंस अघाट॥ ६॥ अंसवंसउपा
संना॥ बाबज औरलीबात॥ वस्तुतामैवगन
हा॥ स्वयंमरूपसाक्षनात॥ ७॥ अंग॥ ८॥ प्रबं
धखंड॥ अद्वैतातीतलक्ष्मीको अंग॥ कैवल
नोपरसासएहेवागुरू॥ तंममाहारेनेगुरूनेछेज
एहेवु॥ उलटउसासगुरूतेजकैवलभये॥ सीस

स्वामी कहाये भान के हे बु ॥ १ ॥ एक अद्वैत कैवल जा
हारे रह्या ॥ नां कसो जात आवो के ते हे वो ॥ के सरषो
कहाये ते ज के हावान ही ॥ एस सरषो तो छे एज ए हे
वो ॥ २ ॥ एक अद्वैत के हे वा गुरु जां हां लगी ॥ तां हां
लगी सी ससा पा सरावे ॥ सी ससा पा भये लीन कै
वल मे ॥ एक अद्वैत पद कु ए का हावे ॥ ३ ॥ एक जां ही
नही द्वैत के था कहे ॥ कु ए के हे ने लहे आप नां ही
वस्तु नी ना स्ती नही जां एज डता गई ॥ पूर सत्तुरी
या मां ले हे नां कोई ॥ ४ ॥ आपनी आद ले ई आं न्य

स तेदेनेनथा॥ पणनही पुरसनीनास्तीकेहेवा॥
४१ येमकैवलएकलपरपीछवु॥ ईछवूनांतांहां
चोचयेहेवा॥ पू॥ अथ अंग॥ ५०॥ चौपाई॥ ३५
१॥ साषी॥ सादेरमांमघीरहे॥ जलपेछीतरनी
रा॥ येसादूनायांआसवे॥ पजेदेवलपार॥ १॥ गीता
आदएकादस॥ दूजाग्रंथअपार॥ पक्षसक्ष
सहनेवाषे॥ कहीनहीनीरधार॥ २॥ जेजेहेनीउ
पासना॥ तेतेहेनुवरणांम॥ हदमापीअनहद
वाषे॥ पांम्यापंथवीरांम॥ ३॥ नांमसपनारगु

एतजगे॥ वगेवीलासितवांए॥ सकलसाहसु
तामेरमे॥ तापरते नीरवांए॥ ४॥ जेहरीअष्ट
रत्येत्ताप्या॥ कुरांनपूरांनकीमांहांय॥ सोहीच
लकचेष्टासवे॥ येनरह्योनीधिसांय॥ ५॥ नीधच
लकीतईतसांमृथ॥ तीनादसअवतार॥ चौध
कलाभीआदलौं॥ वीश्वसहीतवीस्तार॥ ६॥ ईत
चलकितनीधपदेनहा॥ एकमेकमलतांन॥ ताते
तेतेहेनाकेहे॥ आपआपनीजांए॥ ७॥ भरमनंही
भासामहा॥ सकलचोचसमजाय॥ जोजांन्ये

हैस
१४२

येसासहा॥ तोआपेआपसहाय॥ ८॥ कचबुद्धो
त्येकाभयो॥ संसक्ततनुसार॥ जेतीवांणीवां
कडी॥ वस्तुमांहीवीकार॥ ९॥ सूध्यवीनासम।
जायनही॥ ऐकसीद्वांसनोअरथ॥ जोनामांनो
तोत्रु। वो॥ टीकासेतायंथ॥ १०॥ तेमाटेमेंनाकथें
प्ये॥ वंकअंकनीबाद॥ कैवलवस्तुतावदे॥ अ
लगकरीअपवाद॥ ११॥ हंसत्सत्येकाअंथए॥ त
त्त्वदरसंनेतेह॥ अदबदमेसदजांमवा॥ सीडीस
नमुषएह॥ १२॥ कावनहीकवीनानही॥ नहीगु

एग्रेहेवा ज्ञान॥ ब्रह्म मे ब्रह्म बीला सपर॥ काटू पो
तनी द्यांन॥ १३ काटणवाला कवनहे॥ कूण कव
नको पोत॥ अद्वैते द्वैता कसी॥ कोमे कूण उद्योत
१४॥ आपे जांण न आपनु॥ ब्रह्म अध्यात्म भंल॥
जांण बीलाये जंम रस्यो॥ सो आपे कैवल॥ १५॥ कै
वलता कारण मत॥ गती को हो सम काय॥ कूण
देस मारग कवन॥ तुंम जंन को ओल पाय॥ १६॥
अरूढ मता गत अकथहे॥ बीकट वाट बीन ग
व॥ नीराधार का देस मे॥ टके पुरे का पाव॥ १७॥

स ४३
ब्रधात्रवेणाले॥ लाटजोतीसंम॥ येसेतीलकच
घाद॥ परमात्मदरसीपूनी॥ सोममदेसीसाध
१८॥ सकलधर्मअनुकरमना॥ नांमेपंथसराय
भेदहंमपेराहका॥ प्रगटकहंसमजाय॥ १९॥
नांमरूपनारगुणपरे॥ सकलपंथनकेपार॥ अ
बआवतवेहेवारमें॥ कायंमपंथहंमार॥ २०॥ का
यंमपंथहंमारडा॥ कैवलकादेदार॥ साहेभक्
वेरहेआगवा॥ आवोकोहंईयार॥ २१॥ अंग॥ प
॥ चौपाई॥ २२॥ नीआहंसतादेवग्रंथसंपू